

ज्ञान मे ही शक्ति है और आत्मज्ञान ही सबसे बड़ा ज्ञान है। अंधविश्वास छोड़कर  
अपने भीतर का शब्द सुनो; तुम्हारा सच्चा पथ प्रदर्शक तुम्हारे भीतर वर्तमान है।

# मुनि ज्ञानप्रकाश

योग, स्वास्थ्य,  
आत्मज्ञान, सत्य  
और स्वतंत्र विचार  
विषयक पत्रिका

अखिल भूमण्डलीय  
सर्वशिरोमणि  
मुनिसमाज का  
वार्ता वाहक  
**June - 2020**



आदि मुनीश्वर योगेश्वर शिवमुनि जी महाराज

# मुनि ज्ञानप्रकाश

\*\*\*\*\*

कापीराइट(©) और प्रकाशक  
अखिल भूमण्डलीय सर्वशिरोमणि मुनिसमाज (पंजी०),  
मुनीश्वर मठ अलहदादपुरा, गोरखपुर(उ० प्र०) – 273001

Website: [www.shivmunisamaj.com](http://www.shivmunisamaj.com)

Email: [shivmunisamaj@gmail.com](mailto:shivmunisamaj@gmail.com)

Call: 9800946083

Whatsapp: 9800946083 / 8431270007

\*

संस्करण

Apr, May, Jun – 2020

\*

सम्पादक : मुनि सत्यनारायन राम

\*

मूल्य – Rs. 30.00

\*

## विषय – सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
	प्रकाशकीय : एक कोशिश गुरु-दक्षिणा देने की....	3-4
	सम्पादकीय	5
1	मुनि के लक्षण	7
2	शिवमुनी जी के जीवनी से...	8-10
3	ध्यान-चिकित्सा	11-12
4	कुण्डलिया	13
5	Oh Dear, "Muni Gyanprakash"	14-15
6	You are your own teacher	15-16
7	Before and after...	17-18
8	"Subha Bhavna", The Elevating Ode	18-19
	मुनिसमाज के प्रवर्तक, आदि मुनीश्वर परम योगेश्वर, शिवमुनि महाराज का अमर साहित्य	20-32

## प्रकाशकीय

# एक कोशिश गुरु-दक्षिणा देने की....

योग भारतीय मुनियों की प्राचीन विद्या है। यह समस्त विद्याओं से श्रेष्ठ है, क्योंकि इससे मानव अपने शरीर की स्वास्थ्य बनाये रख सकता है, मन की अशांतियों से छुटकारा पा सकता है और अपने आपका ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

यह एक आश्चर्य है, किन्तु सत्य है कि संसार की समस्त विद्याओं को जानकर भी यदि आपने योग विद्या को नहीं जाना, अपनाया नहीं, उसे व्यवहार में नहीं लाया तो आपको सारी विद्याएं व्यर्थ सिद्ध होंगी। ऐसा इसलिए कि आपको उनसे कभी सच्चा सुख, सच्ची शांति और सच्चा आनन्द नहीं मिल सकता। आपको उनसे अशांति, परेशानी और समस्याएं ही मिलेगी।

योग विद्या को जानना कठिन नहीं है, परन्तु उसे अपनाना कठिन है; क्योंकि योग के बारे में आजकल की संसार में जितना भ्रम है वह सायद किसी और विद्या में नहीं है। सच्चा योग ज्ञान सिर्फ सच्चा गुरु से ही मिल सकती है। मुनिसमाज के प्रवर्तक आदि मुनीश्वर योगेश्वर शिव मुनि महाराज ने योग का सच्चा ज्ञान को अत्यन्त सरल, सुगम और सुलभ कर दिया है, ताकि मानव मात्र उससे पूरा-पूरा लाभ उठा सकें।

त्रैमासिक पत्रिका “मुनि ज्ञानप्रकाश” में इस सर्वोपयोगी और सर्वश्रेष्ठ योग विद्या को आपके लाभार्थ प्रस्तुत किया जाता है।

इस अमूल्य पत्रिका को आप [www.shivmunisamaj.com/emagazine](http://www.shivmunisamaj.com/emagazine) से डाउनलोड(download) कर सकते हैं।

आप अपना लेख इस पत्रिका में देने के लिए संपर्क करे:  
Email: [shivmunisamaj@gmail.com](mailto:shivmunisamaj@gmail.com)  
Call: 9800946083  
Whatsapp: 9800946083 / 8431270007

शुभभावनाओ सहित,  
जयजीव

अ० भू० स० मुनिसमाज(पंजी०)  
दिनांक : ३० जून २०२०

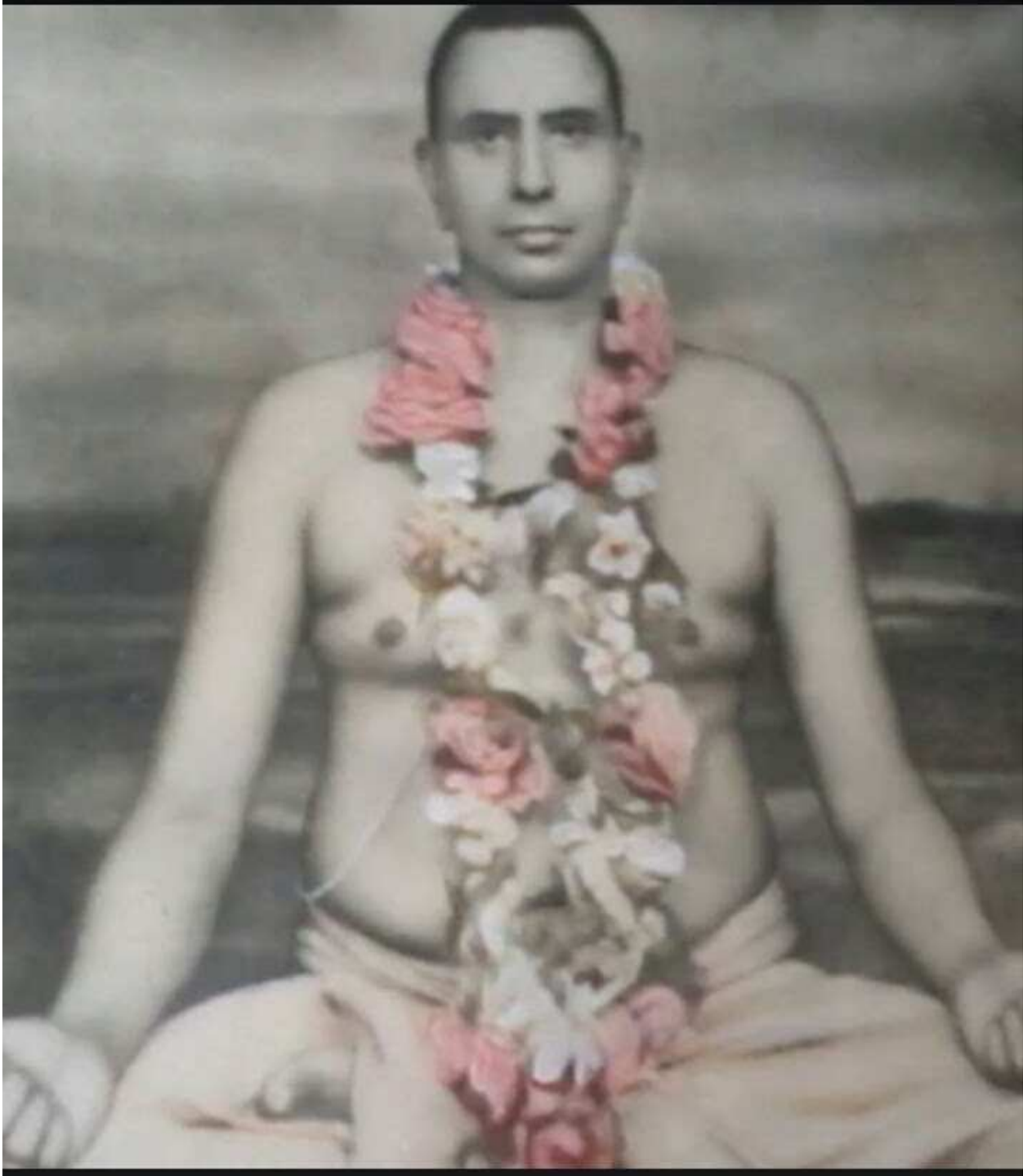
## सम्पादकीय

प्रिय पाठकों,  
जय जीव।

आप सभी को बताते हुए आनन्द की अनुभूति हो रही है कि सदगुरुदेव शिवमुनि जी और मुनिसमाज के सिद्धान्त व दर्शन को पूरे विश्व में फैलाने के लिए हिन्दी और अंग्रेजी में एक त्रैमासिक ईमैगजीन “मुनि ज्ञानप्रकाश” को प्रकाशित करना शुरू हुआ है।

यह “मुनि ज्ञानप्रकाश” पत्रिका मुनिसमाज के वेबसाइट [www.shivmunisamaj.com/emagazine](http://www.shivmunisamaj.com/emagazine) पर उपलब्ध है, जिसे आप डाउनलोड करके प्रिंट भी कर सकते हैं। “मुनि ज्ञानप्रकाश” ईमैगजीन में प्रकाशित होने के लिए एक या एकाधिक पृष्ठ की अपनी स्वलिखित वा स्वरचित अप्रकाशित रचना हिन्दी या अंग्रेजी में भेज सकते हैं। “मुनि ज्ञानप्रकाश” पत्रिका में यदि कुछ त्रुटियाँ रह गई हों तो आप हमें अवश्य बतायें। साथ ही साथ “मुनि ज्ञानप्रकाश” ईमैगजीन को बेहतर बनाने के लिए अपना सुझाव भी दें।

सधन्यवाद,  
आपका सत्यनारायण मुनि,  
सम्पादक,  
मुनि ज्ञानप्रकाश,  
मोबाइल नम्बर:9800946083



**अ  
मृ  
त  
ब्रं  
द**

मुनिसमाज ने इसीलिए जन्म ग्रहण किया है कि दुनियाँ को आत्मलोक प्राप्त करने के लिए पूर्ण स्वतंत्र होने की शिक्षा दे। मुनिसमाज ही एक ऐसी संस्था है जिसने पहले अपनी आत्मा को जानने और उसकी उपासना करने की शिक्षा दी। आत्मलोक तो वे जायेंगे जो आत्मा की उपासना करते हैं।

# 1 - मुनि के लक्षण

१. जो किसी मजहब अथवा सम्प्रदाय का पक्ष न लेकर आत्मोन्नति के विषय पर परम स्वतन्त्र बुद्धि से विचार करता है, वह मुनि है।
२. आत्मबल, ज्ञानबल, योगबल और मनोबल बढ़ाने का जो नित्य साधन करता है, वह मुनि है।
३. जो किसी का अनुयायी न होकर अपनी स्वतन्त्र बुद्धि से विचारते हुए अपनी आँखों से देखकर चलता है वह स्वतन्त्र और स्वावलम्बी मनुष्य मुनि है।
४. जो सत्य को जानता या अत्यन्त निष्पक्ष और स्वतन्त्र होकर सत्य की खोज में है और सत्य कहने वाले की प्रतिष्ठा करता है, वह मुनि है।
५. जो वाद और विवाद से अधिक आत्मोन्नति नीति के विचार और साधन में लगा है और ग्रंथज्ञान से अधिक अनुभवजन्य ज्ञान का भरोसा करता है, वह मुनि है।
६. जो रिश्वत, भीख चोरी और असत्य से घृणा करता हुआ ऐसे शारीरिक या मानसिक परिश्रम द्वारा, जिससे दूसरों का भी उपकार हो, जीवन-निर्वाह के लिए धनोपार्जन करता है, वह मुनि है।



## 2 - शिवमुनी जी के जीवनी से...

हम स्वयं बहुत रोगी और निर्बल थे। माता-पिता से मालूम हुआ था कि बाल्यावस्था में हमारा शरीर इतना निर्बल था कि ४ वर्ष की अवस्था तक निर्बलता के कारण न चलने की शक्ति थी, न बोलने की। १०-११ वर्ष के बीच में शायद एक दिन भी ऐसा नहीं गया, जिस दिन हमारा यह शरीर किसी न किसी रोग से बीमार न रहा हो। वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों ने औषधि से हमारे शरीर को भर दिया; फिर भी वास्तव में कोई लाभ नहीं हुआ। एक रोग यदि डाक्टर रोक देते थे, तो चार नये हो जाते थे। बाल्यावस्था में माता-पिता हमें अत्यधिक प्यार करते थे, जरा भी कुछ हुआ कि वैद्य के पास पहुंचे। नित्य किसी-न-किसी वैद्य, डाक्टर या हकीम के घर जाता था या वे स्वयं आते थे। औषधियों के अलावा भोजन भी हमें ऐसा दिया जाता था; जिसे कभी हमारी आत्मा स्वीकार नहीं करती थी। नित्य एक-न-एक प्रकार का जहर खाना पड़ता था। भोजन वैद्यों और डाक्टरों के कहने से ऐसा दिया जाता था जिसे माता-पिता खड़े होकर, धमका और डरा कर और कभी-कभी मार कर भी खिलाते थे। दस-बारह वर्ष की अवस्था तक अपनी रुचि का भोजन न मिलने से शरीर अत्यन्त निर्बल और पीला हो गया था। अन्त में माता-पिता दवा करते करते ऊब गये। हमें अच्छा होते न देख कर अब माता-पिता का प्रेम

भी कम होने लगा। वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों से पिण्ड छूटा हम अब अपनी रुचि का भोजन करने लगे।

इसी बीच में हमारा ध्यान योग-साधना की ओर विशेष रूप से आकर्षित हुआ। समाधि तो हमें ७ वर्ष की अवस्था में ही लग जाती थी, लेकिन कोई दूसरा गुरु नहीं मिला। साधुओं-सन्यासियों से पूछने पर वह कह दिया करते थे कि अभी तुम बालक हो, गृहस्थ हो, निर्बल हो, रोगी हो, अतः योग के अधिकारी नहीं हो। बात यह थी कि वह स्वयं इसे नहीं जानते थे; पर साधुओं और सन्यासियों के लिए यह कहना कि “हम योग नहीं जानते” बड़ी लज्जा की बात थी। अतः अनेक प्रकार से टाल-मटोल किया करते थे। हमें स्वयं अपने मार्ग का पता लगाना था। कई बार ठोकर खाने के बाद अंत में किसी न किसी तरह से सत्य-मार्ग को ढूँढ निकाला और ५० वर्षों तक योग-साधन कर लेने के बाद योग विषय पर “योग-साधन” नाम की पुस्तक हमने लिखी। इसके सहारे प्रत्येक गृहस्थ बिना गुरु के भी योग कर सकेगा। यह पुस्तक “ज्ञानशक्ति प्रेस, गोरखपुर” से मिल सकती है। माता-पिता ने योगाभ्यास करने से मना किया, पर हम अपने धुन के पक्के थे। इससे माता-पिता का प्रेम और भी कम हो गया। अब वह हमारे शरीर से निराश हो गये। अतः अब हम सर्वथा स्वतन्त्र कर दिये गये। औषधियाँ बन्द कर दी गयीं, डाक्टरों ने हमें देखना छोड़ दिया, माता-पिता ने हमारे दूसरे भाइयों को देखकर सन्तोष धारण किया। इस वक्त हम सर्वथा स्वतन्त्र थे, जो चाहें खायें, जो चाहें करें और जहाँ चाहें रहें। इसका

बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। हमारा शरीर दिन पर दिन क्रमशः बलवान् और नीरोग होने लगा। कुछ वर्षों के बाद तवीयत अच्छी हो गई, मस्तिष्क स्वस्थ और मन प्रसन्न रहने लगा।

अब हमारे अन्तःकरण में यह विचार उठने लगा कि रोगों के कारण वैद, हकीम, डाक्टर, औषधियाँ हैं। दिन पर दिन बीतते गये और हम क्रमशः बलवान् और नीरोग होते गये। ज्यो-ज्यों अनुभव करते जाते थे; त्यों-त्यों यह विचार दृढ़ होता गया कि रोगों के कारण वैद्य, हकीम, औषधि और डाक्टर हैं। हमने आयुर्वेद के ग्रन्थों को भी बड़े परिश्रम से पढ़ा; होमियोपैथी, हाइड्रोपैथी, क्रोमोपैथी, युनानी चिकित्सा पद्धति और कुछ एलोपैथी को भी देखा; पर इन चिकित्साओं से हमारा मन प्रसन्न नहीं हुआ। हमें बहुत अच्छी अच्छी औषधियां मालूम हैं; पर हमारे अनुभव ने औषधियों की ओर से बड़ी अश्रद्धा और अविश्वास उत्पन्न कर दिया है। हमारा विश्वास था कि यदि सोचा जायगा; ध्यान किया जायगा और मनन किया जायगा तो एक न एक दिन नीरोग और स्वस्थ होने का कोई सर्वोत्तम उपाय अवश्य मिल जायगा। वही हुआ और इतने दिनों के परिश्रम, मनन, विचार अध्ययन और चिन्तन के बाद वह सच्चा उपाय मिल गया।

(आदि मुनीश्वर योगेश्वर श्री शिवमुनी जी महाराज के जीवनी से संगृहीत)

### 3 - ध्यान-चिकित्सा

प्रातःकाल सबसे पहले जब आप की निद्रा टूटती है, उस समय अन्य भावनाओं से हृदय स्वच्छ रहता है – इस समय की भावना का शरीर पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। अतः प्रातःकाल ज्यो हो निद्रा टूटे सबसे पहले यही भावना करो कि हम नीरोग हैं। हमारे शरीर से रोग निकल रहा है। चारों तरफ हमारे शरीर के भीतर अमृत-स्वरूप निरामय परमात्मा व्यापक हो रहा है। चिन्तन करो कि हमारे चारों ओर अमृत-स्वरूप निरामय परमात्मा का समुद्र भरा हुआ है। हमारे अणु-अणु में वह व्यापक हो रहा है। रोग का कहीं पता नहीं। बस इतना सोचकर उठो, अपना नित्य कर्म कर डालो, योग-व्यायाम भी कर डालो। चक्रभेदन की क्रिया, योग-व्यायाम करके सुखासन से लेट जाओ, अपने चित्त को एकाग्र करो। चित्त श्वास पर लगा रहे तो और अच्छी बात है। श्वास लेते समय ध्यान करो कि हम अमृतपूर्ण जीवनदायी और स्वच्छ प्राणों को भीतर ले जा रहे हैं। प्राणों में जीवनदाता परमात्मा व्यापक है। प्राणों द्वारा हमारे भीतर जीवन बल और स्वास्थ्य का प्रवेश हो रहा है, इसी का चिंतन करो। श्वास जीवनमय और जीवनदाता है। श्वास के निकलने के साथ यह भावना करो कि सारा रोग शरीर के बाहर निकल रहा है। इस तरह श्वास पर चित्त लगाने से थोड़ी देर में चित्त एकाग्र हो जायेगा। जब चित्त एकाग्र हो जाये, तो फिर वही भावना करो – जो प्रातःकाल उठते ही करने के लिए मुनि समाज के

सदस्यों को बताया गया है। इस समय जरा इस भावना को देर तक करो कि हम नीरोग हैं और निर्विकार हैं। हम वह हैं, जिसमें रोग हो नहीं सकता। हमें जरा और मृत्यु नहीं सता सकती। हम ईश्वर है – यह संसार ईश्वर है और यह शरीर भी ईश्वर है, सिवाय ईश्वर के और कुछ है नहीं। ईश्वर की मृत्यु कैसी, जरा कैसी और उनमें रोग कैसा? आँख बन्द करके भावना करो, हम अमृतमय स्वास्थ्यपूर्ण तथा ईश्वरमय शीतल समुद्र में पड़े हुए हैं। चारों तरफ क्षीरसागर के समान स्वच्छ, जीवन और बल का देने वाला सागर है और विष्णु-रूप हम आनन्द से उस पर सो रहे हैं। भावना करो कि हम शिवरूप हो गये और हमारा रोग दूर हो गया।

बस, यह ध्यान करके उठो और अपने कार्य में लग जाओ। स्वच्छ वायु, जिससे मन प्रसन्न हो; वही हितकर है। स्वच्छ जल पीओ और जिसे तुम खाना चाहते हो – खाओ। खाने से अच्छी चीज वही है, जिसके खाने से तुम्हारी आत्मा पूर्ण रूप से संतुष्ट होती है। डर कर स्वच्छ वायु और रुचिकर भोजन से परहेज न करो। डरो मत, तुम रोगी नहीं हो। डर कर, तुम जीवनदायिनी वस्तुओं से परहेज करते हो। ऐसा करने से रोग और बढ़ता जाता है। दृढ़ जान लो कि हमारे में रोग नहीं है। जिसे रोग कहते हो, वह रोग नहीं है।

(आदि मुनीश्वर योगेश्वर श्री शिवमुनी जी महाराज द्वारा रचित “नीरोग होने का अद्भुत उपाय” पुस्तक से संगृहीत)

## 4 - कुण्डलिया

रामायण का मर्म साधु कोई बिरला जानै ।

जानै कोई साधु करै जब सद्गुरु सेवा ।

सद्गुरु के उपदेश मिटै सब भ्रम का भेवा ॥

भेद बुद्धि को त्यागि होय निर्भय निश्शंका ।

सब चक्रन को भेदि चढै त्रिकुटी गढ़ लंका ॥

लंका चढि दशमुखी चित रावण को मारै ।

कुंभकरण तम मारि नींद को बस में धारै ॥

नाद अनाहद मेघ समाधि सोता जानै ।

निजरूप अबध को चलै चढै निज ज्ञान विमानै ॥

(अज्ञात)

अ  
मृ  
त  
बू  
द

आत्मा ही सबसे बड़ा और महान है, इसलिए इसको “ब्रह्म” कहते हैं। इस आत्मा का या इस ब्रह्म का, ज्ञान के साथ नित्य सम्बन्ध है। ज्ञान का ही नाम वेद है। ज्ञान का जहाँ पर 'अन्त' होता है, जो सबसे ऊँचा ज्ञान है, जिससे परे दूसरा कोई ज्ञान नहीं है, जिसे जानकर फिर कुछ जानने के लिए नहीं रह जाता, उसी आत्मज्ञान का नाम “वेदान्त” है। वेदान्त के ही सिद्धान्तों को वेदान्त-सिद्धान्त कहते हैं। वेदान्त-सिद्धान्त और स्वतन्त्र विचार में कोई भेद नहीं है।

## 5 - Oh Dear, “Muni Gyanprakash”

Oh Dear “Muni Gyanprakash” (मुनि ज्ञानप्रकाश),

You are a quarterly eMagazine to share the knowledge of Munisamaj, established on the basis of philosophy of ShivMuni.

You contain the articles related to spiritual knowledge, Yoga and independent thoughts as well as health and philosophy of the life.

You are our tribute to Aadi Munishwar Yogeshwar Shivmuni ji Maharaj and carry the messages and knowledge of our Sadgurudev Shivmani.

You will show a ray of knowledge to listen inner-voice and awake people to give up blind-faiths from their life.

You will tell people about the true philosophy of life and start their journey towards inner-self.

You will tell people about true religion and also reveal the truth of religious books.

You will motivate people to take care of their health and enjoy happiness.

You will complete the journey of every single being and help them to reach their ultimate goal.

We hope you will propagate the philosophy and knowledge of Shivmuni and Munisamaj across the globe.

(Written by Muni Satyanarayan)

## **6 - You are your own teacher**

(1)

Your conduct can not be purified by lectures of somebody else; instead jealousy, anger and malice arise in the heart. So, our true Guru is our own soul. Therefore, if you want to step on the ladder of progress, then consider your soul as your teacher, take initiation from it.

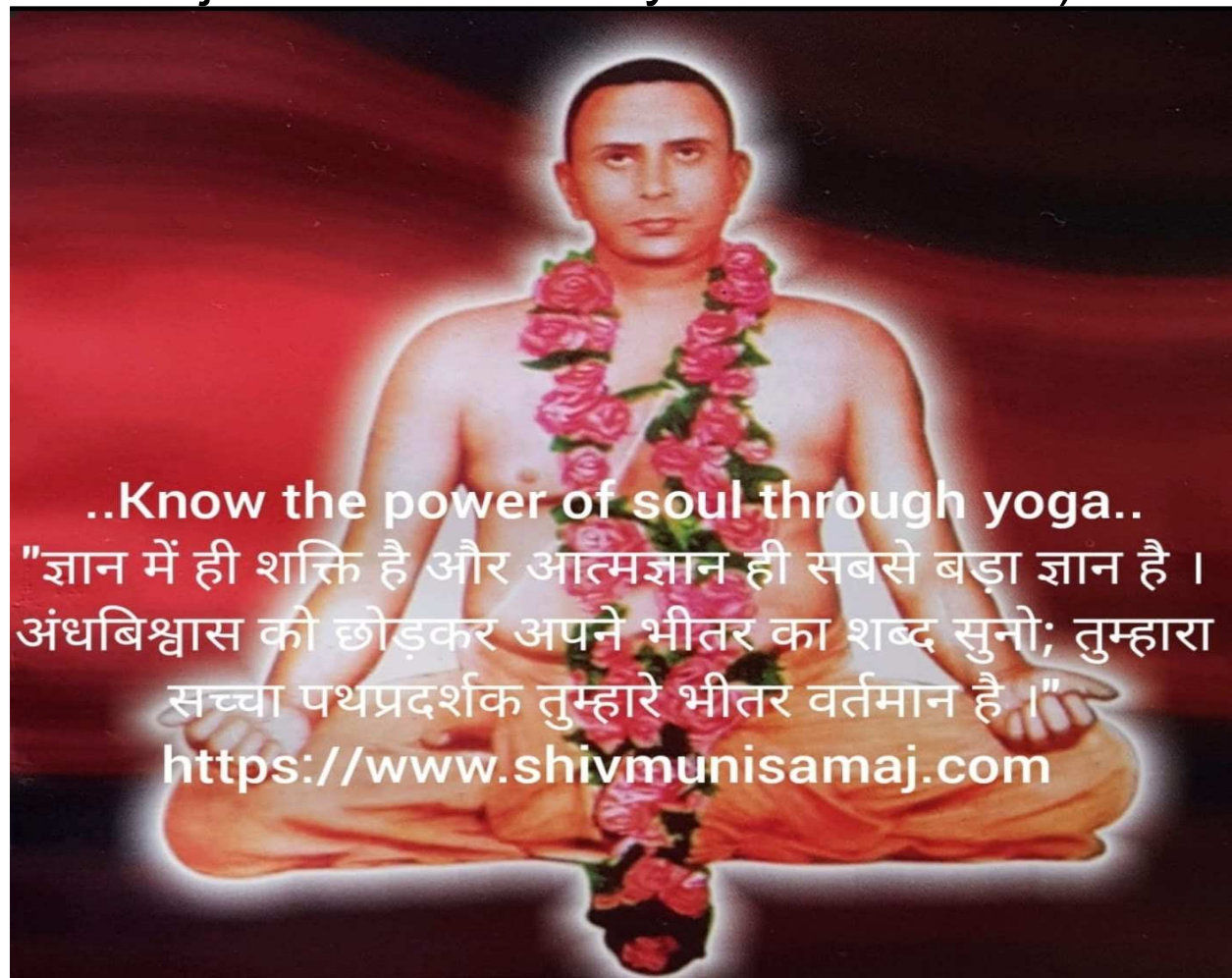
(2)

Always pay attention to the shortcomings, errors, mistakes, bad habits in you, and try to remove them. Fight with your evil-self. Today this much shortcomings are removed, these many errors have been left in me, now I cannot follow these parts of brahm-vidyaa (ब्रह्मविद्या - theology) - contemplate about these topics regularly. If you wish your welfare, if you want



to improve your life, then you should be vigilant by handling over the reins of your horse-like-mind to your own soul. Controlling them is your duty; this can't be done by others. Be alert and beware by holding the reins of your mind like reindeers in the forest. Always keep attention on your mind, like a bicycle rider taking care of his balance.

(Collected from the book “**Shantidayi vichar**”, written by Munishwar yogeshwar Shivmuni ji Maharaj and translated by Munimati Julia)



आदि मुनीश्वर योगेश्वर शिव मुनि जी महाराज

## 7 - Before and after...

1. I used to argue; now I discuss the things.
2. I used to impose my thoughts on others; now I've patience to hear what others say.
3. I used to give negative comments whatever i see and listen; now I think the positive side first.
4. I used to kick the wall in washroom to release my stress; now I go inside myself, praising my whole day of work.
5. I used to speak a lot; now I'm trying to listen.
6. I used to speak aloud; now I'm thinking whether I'm making noise while talking.
7. I used to catch the butterfly; now I watch it flying happily.
8. I clapped whenever i see a flock of birds picking grains; now i try to hide myself not to scare them.
9. I used to pick whatever i like in my plate; now i think whether I'm leaving for others too.
10. I filled my stomach indeed!!; now i feel my stomach in need.
11. I used to tear my old clothes; now I'm donating them to needy.

12. I purchased more than i need; now i think that money might be mine but resources are for everyone and they are limited!!
13. I praised skyscrapers; now I'm praising sun, tree, water and air.
14. I scolded people when they did mistakes, now I keep calm and try to understand their situation.

These are the changes i noticed in myself after becoming a muni. The list goes on, but i could write down this much...

(By Munimati Julia)

## 8 - “Subha Bhavna”, The Elevating Ode

Deathless, diseaseless,  
All powerful I am,  
A handsome youngker,  
Rich and fortunate I am.

Malice and malady gone,  
With the light on,  
I frolic with joy,  
No disease I carry on.

All fortune and weath here,  
 Young, Immortal I am.  
 The king of kings,  
 And Lord of Lords I am.

Foolish and ignorant are they,  
 Who belittle the Soul,  
 Full of wisdom I am,  
 Bondage snapped as a whole.

I am the blissful 'Shiva',  
 Independent I am,  
 Carefree happy,  
 And emancipated I am.

(Written by Munishwar yogeshwar Shivmuni ji  
 Maharaj and translated by Muni Harbhagwan &  
 Muni Sudama Prasad)

अ  
मृ  
त  
बुं  
द

बड़े-बड़े विज्ञान वेत्ताओं ने बड़े-बड़े फिलासफरों ने जो कुछ आविष्कार किया है, जो कुछ लिखा है, उसे वृत्त वा परिधि में स्थित होकर नहीं – बाहर स्थित होकर नहीं, किन्तु जो कुछ उन्होंने पाया है केन्द्र में स्थित होकर, अन्तर्मुख होकर और भीतर को सिमित कर अर्थात् अपने में आकर।

--समाप्त--

# मुनिसमाज के प्रवर्तक, आदि मुनीश्वर परम योगेश्वर, शिवमुनि महाराज का अमर साहित्य

--योग का सच्चा स्वरूप बताने वाले अनुभवपूर्ण ग्रन्थ--

- 1) सचित्र योगसाधन (सम्पूर्ण): योग का एक सर्वांगपूर्ण ग्रन्थ जिसे शिव मुनिजी ने स्वयं ४० वर्षों तक योगाभ्यास करके लिखा है। लगभग २५० पृष्ठों में नवीनतम संशोधित संस्करण, जिसमें पुराने संस्करणों की तमाम दुर्लभ सामग्रियाँ भी दी गई हैं। चित्रों को भी सुन्दर रूप में जहाँ उनका वर्णन है वहीं पर दिया गया है।
- 2) योगदर्शन शास्त्र - 1 (समाधिपाद) (हिन्दी मुनीश्वर भाष्य): मुनि पतंजलि द्वारा रचित योगदर्शन शास्त्र के समाधिपाद पर मुनिश्वरजी द्वारा विस्तृत हिन्दी भाष्य, जिसने भारत की सच्ची योगविद्या को लुप्त होने से बचाकर साधकों का महान उपकार किया है और योग विषयक अनेक भ्रमपूर्ण धारणाओं को दूर करके उसका वास्तविक रूप प्रकट किया है।
- 3) योगदर्शन शास्त्र - 2 (साधनपाद) (हिन्दी मुनीश्वर भाष्य): पतंजलि मुनि द्वारा रचित योगदर्शन शास्त्र के साधनपाद पर मुनिश्वरजी द्वारा विस्तृत हिन्दी भाष्य,

जिसने भारत की सच्ची योगविद्या को लुप्त होने से बचाकर साधकों का महान उपकार किया है और योग विषयक अनेक भ्रमपूर्ण धारणाओं को दूर करके उसका वास्तविक रूप प्रकट किया है।

- 4) योग और उसकी गुप्त सिद्धियों को प्राप्त करने का उपाय: योग-सिद्धियों के नाम परे जो भ्रम फैला है और जनता ठगी जा रही है, इस पुस्तक में उनका भंडाफोड़ करके सच्ची सिद्धियों का युक्तियुक्त रूप प्रकट किया गया है।
- 5) सत्य सरल और सर्वांगपूर्ण योग का परिचय: मुनिसमाज के सदस्यों को सर्वांगपूर्ण योगसाधन की जो शिक्षा-दीक्षा दी जाती है यह पुस्तक उसकी भूमिका है।
- 6) योग विज्ञान: इसमें योग के वैज्ञानिक तत्वों को समझाते हुए “शिवोअहम्” मन्त्र की उपासना का उपदेश दिया गया है।
- 7) सच्ची संध्या: प्राणायाम ही संध्या है, इसका वैज्ञानिक रूप बताने वाली एक खोजपूर्ण पुस्तक । यह शिव मुनिजी की प्रारम्भिक रचनाओं में से है।
- 8) प्रणव की महिमा: योग मे प्रणव या ॐ जरूरी क्यूँ है शिवमुनी जी महाराज इस किताब मे लिखे हैं। शब्द-ब्रम्ह ॐ की महिमा और आवश्यकता जानने इस किताब को जरूर पढे।



## --आयु आरोग्य और आत्मबल बढ़ाने वाली अद्भुत पुस्तकें--

- 1) शरीर से अमर होने का उपाय: अपने विषय की यह एक अद्वितीय पुस्तक है। इसमें अमृतत्व को प्राप्त करने के आध्यात्मिक उपाय बताए गए हैं। यह ज्ञान सचमुच मनुष्य को जीवन देकर मृत्यु से निर्भय बनाने वाला है।
- 2) नीरोग होने का अद्भुत उपाय: इस पुस्तक में बिन औषधियों के मानसिक शक्ति और शुभ-भावना द्वारा आरोग्य लाभ करने के अनेक सफल उपाय बताए गए हैं।
- 3) आत्मबल मनोबल और इच्छाशक्ति: मनुष्य को अपनी आन्तरिक शक्तियों से परिचित कराके आत्मोन्नति का मार्ग दिखाने वाली इस पुस्तक में आत्मबल द्वारा दूसरों का रोग दूर करने की विधि भी दी गई है।
- 4) वृद्धावस्था और कुरूपता दूर करने का उपाय: इसमें यौवन और सौन्दर्य का आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक रहस्य समझाया गया है।

## --धार्मिक अंधविश्वासों और राजनितिक बंधनों से छूड़ाने वाले स्वतंत्र विचार के क्रान्तिकारी ग्रंथें--

- 1) सत्य सुन्दर और स्वतंत्रविचार: इसकी एक-एक पंक्ति धार्मिक जगत में क्रान्ति उत्पन्न करने वाली है। इस पुस्तक को पढ़े बिना आप शिव मुनिजी की विरधारा से पूर्ण परिचित नहीं हो सकते।

- 2) शान्तिदायी विचार: यदि आप शिव मुनिजी की एक ही पुस्तक पढ़ना चाहते हैं तो इसे पढ़िए । इसमें उनके सिद्धान्तों के हर पहलू पर विचार हैं, जो हृदय में अनुपम शान्ति और शक्ति भर देते हैं।
- 3) अत्यन्त सत्य और आत्मज्ञान की कथायें: इसमें आत्मा की सत्ता और महत्ता अपूर्व युक्तियों से सिद्ध की गई है और आत्मज्ञान सम्बन्धी कई लघु दृष्टान्त कथायें भी दी गई हैं।
- 4) मनुष्य की महिमा; ईश्वर की नहीं: मनुष्य ने ही तरह-तरह के ईश्वरों की रचना कर ली है, पर वह स्वयं अपनी ही महिमा भूल गया है। इस पुस्तक में उसी को प्रकट किया गया है।
- 5) ईश्वर है या नहीं ? : इस विषय पर इस पुस्तक में अत्यन्त स्वतन्त्र और क्वान्तिकारी विचार प्रस्तुत किये गये हैं और ईश्वर की मिथ्या कल्पना का खण्डन करके सच्चे ईश्वर का निरूपण किया गया है।

### --स्वर्ग-नरक मुक्ति और सृष्टि के रहस्यों पर मौलिक पुस्तकें--

- 1) सूक्ष्म शरीर सूक्ष्म लोक स्वर्ग और मुक्ति का रहस्य: सूक्ष्म शरीर क्या है मरने के बाद क्या होता है, स्वर्ग-नरक की वास्तविकता क्या है और जीवन्मुक्त का लोक कौन है ? इन रहस्यों का युक्तियुक्त समाधान इस अद्वितीय पुस्तक में है।



- 2) सच्ची शान्ति, सच्ची मुक्ति और सच्चा स्वराज प्राप्त करने का उपाय: संसार की समस्त अशान्तियों, युद्धों और झगड़ों की जड़ धर्म और राजनीति है इनसे मनुष्य जाति कैसे छूट सकती है इसमें इसी विषय पर मौलिक विचार हैं।
- 3) मुक्त और स्वतन्त्र होने का उपाय: चेतन कैसे स्वभाव से मुक्त है, इसी तत्वज्ञान की अनुपम विवेचना इस पुस्तक में है।
- 4) सृष्टि विज्ञान शास्त्र: सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय सम्बन्धी धार्मिक कथायें और वैज्ञानिक सिद्धान्त दोनों संतोषजनक नहीं हैं। उनकी विवेचना करते हुए पुस्तक में एक सवंधा नवीन सिद्धान्त प्रस्तुत किया गया है।
- 5) भूतविद्या वा मेस्मेरिजम: इस पुस्तक में इस विद्या के रहस्यों को स्पष्ट करते हुए “सिद्ध दर्पण” इत्यादि खेलों का रहस्यीद्घाटन किया गया है और मन की अदूभुत शक्ति प्रकट की गई है।

### --वेद और वेदान्त विषयक अनुपम ग्रन्थ--

- 1) वेदान्त सिद्धान्त: इसमें शिव मुनिजी ने अनेक युक्तियों और प्रमाणों से वेदान्त सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते हुए अपने “जीवाद्वैत” सिद्धान्त का निरूपण है।
- 2) सूक्ष्म अधर्व वेद: इसमें अर्थवेद के आत्मज्ञान सम्बन्धी प्रमुख मन्त्रों का अद्वितीय भाष्य है, जिससे वेद का सच्चा

अभिप्राय स्पष्ट हो जाता है। इसमें वेद भाष्य की एक अपूर्व शैली अपनायी गई है जो शिव मुनि जी की अनुपम देन है।

- 3) यजुर्वेद सूक्ष्म: इसमें यजुर्वेद के आत्मज्ञान विषयक प्रमुख मन्त्रों का पूर्व हिन्दी भाष्य है जिससे वैदिक ऋषियों के सिद्धान्त स्पष्ट हो जाते हैं। इसमें भी शिव मुनिजी ने वेदों द्वारा ही वेदों का भाष्य करने की अपनी विशिष्ट शैली अपनायी है।
- 4) गायत्री मन्त्र का सच्चा अर्थ: इसमें गायत्री मन्त्र का वास्तविक उद्देश्य और आध्यात्मिक महत्व बताया गया है।
- 5) ईशावास्योपनिषद् का निष्पक्ष भाष्य: यह शिव मुनि जी के जीवन की अन्तिम कृति है।
- 6) छांदोग्य उपनिषद् में आत्मज्ञान: सामवेद के अन्तर्गत इस प्रसिद्ध उपनिषद् में आत्मा का स्पष्ट स्वरूप बतलाया गया है।

### --आलोचनात्मक पुस्तकें--

- 1) मुनिसमाज और आर्यसमाज: आर्यसमाज भी दूसरे सम्प्रदायों के समान है। इसमें मुनिसमाज और आर्यसमाज का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए सिद्ध किया गया है कि वेदों में ईश्वर का वर्णन नहीं है।

- 2) परमार्थ प्रकाश: इसमें आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द की एशान पुस्तक “सत्यार्थ प्रकाश” की निष्पक्ष आलोचना करते हुए ऐसे युक्ति प्रमाण दिये गए हैं, जिनको पढ़कर विचारवान चकित हो जाते हैं और मुनिसमाज के समर्थक बन जाते हैं। इसमें शिव मुनिजी के अकाट्य तर्क देखने को मिलेंगे।
- 3) तुलसीकृत रामायण की आलोचना: तुलसीदास के ग्रन्थ “राम-चरित्र मानस” ने अनेक अन्धविश्वास फैला रखे हैं- इसमें उन्हीं की निष्पक्ष विवेचना की गई है।
- 4) मुनिसमाज की स्थापना का उद्देश्य: सोनबरसा राज में १६.४५ में सर्वशरोमणि मुनिसमाज के प्रसिद्ध दशम् महाथिवेशन में शिव मुनि जी का अध्यक्षीय भाषण।
- 5) शंका समाधान: इसमें जिज्ञासुओं और शिष्यों की अनेक शंकाओं का संतोषजनक समाधान किया गया है।

### --गीता , रामायण और भागवत का तत्वज्ञान--

- 1) गीता पर अत्यन्त निष्पक्ष और स्वतन्त्र विचार: गीता पर अब तक जितनी पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं, यह उन सबसे विचित्र है। गीता-प्रेमियों को इसे अवश्य देखना चाहिए।
- 2) गीता का मर्म: इसमें गीता के श्लोकों द्वारा ही गीता में बार-बार आये हुे “अहम्” और “माम्” शब्दों का वास्तविक अभिप्राय समझाया गया है। यह पुस्तक गीता का सच्चा अर्थ समझने की कुन्जी है।

- 3) भागवत का मर्म: यह पुस्तक भागवत में वर्णित श्रीकृष्ण की लीलाओं को समझने के लिए आवश्यक है। इनमें उन कथाओं का आध्यात्मिक अर्थ स्पष्ट किया गया है। भागवत-प्रेमियों और कथावाचकों को इसे अवश्य देखना चाहिए।
- 4) रामायण का मर्म: इसमें राम कथा की पुस्तकों में छिपे हुए आत्मज्ञान को प्रकट करके सच्चे “राम” का पता लगाया गया है।
- 5) सीता रामायण: इसमें सीताजी ने अपने मुख से राम की कथा लवकुश को सुनायी है। यह पुस्तक बड़ी ही रोचक शैली में लिखी गई है, जिससे राम का वास्तविक जीवनचरित्र प्रकट होता है।

### --कहानी संग्रह--

- 1) शिवमुनि कहानी संग्रह: इसमें शिवमुनी जी महाराज ने योग का महत्व कहानी के माध्यम से समझाने की कौशीस किए हैं।

### --भजन साहित्य--

- 1) भजन ज्ञान गीता: स्वयं शिव मुनि जी की रची हुई ४० भजनों का नया पाकेट सस्करण ! “भजन ज्ञानगीता” की ६ भजनों एवं शुभभावना का संगीतमय कैसेट।

## --सामाजिक रीत-नित मे सुधार लाने वाले ग्रंथे--

- 1) स्वतंत्र विचार की विवाह पद्धति: मुनिसमाज मे और सारी समाज मे विवाह कैसे होना चाहिए जिससे रीस्ते मे सफलता मिले इसके बारे मे इस किताब मे लिखा हुआ है।
- 2) वीर्य रक्षा: कैसे धातु क्षीणता या स्वप्न-दोष का निवारण कर के जीवन मे नया स्फूर्ति लाना है और वीर्यवान रहना है, इसके बारे मे यह क्रांतिकारी पुस्तक है।
- 3) परदे का पाप: समाज मे औरत जात के लिए जो पर्दा का प्रथा है उसका बुरा प्रभाव के बारे मे इस किताब मे उल्लेख है। पर्दा का प्रथा हटाने से क्या क्या लाभ है उसके बारे मे लिख के शिवमुनी जी महाराज सबका ध्यान समाज कल्याण के तरफ खिचे हैं।
- 4) ताजा और सत्य सनातन धर्म: परम योगेश्वर, शिवमुनि जी महाराज ने ताजा और सत्य सनातन धर्म लिखकर उसके सच्चे स्वरूप को पुन स्थापित करके उसकी शाश्वताए को उजागर कर दिया है।
- 5) शिव मुनि महाराज का मुनीश्वर पद से प्रथम भाषण: मुसमाज स्थापना के बाद जोगेश्वर शिवमुनी जी महाराज के मुख से प्रथम संभासन को यहाँ उल्लेख किया गया है।
- 6) सनातन धर्म में शुद्धि: दूसरे धर्मों से पुनः अपने हिन्दू धर्म में वापिस मिलने वालों के शुद्धि कार्य के समर्थन में यह किताब लिखी गयी है।

## --शिवमुनि ग्रन्थावली (प्रथम खण्ड)--

इस ग्रन्थावली में शिवमुनी जी महाराज के नीचे दिया गया किताबें और शिवबचनामृत मिलाकर प्रकशीत किया गया है।

1. निरोग होने का अद्भुत उपाय
2. आत्मबल मनोबल और इच्छशक्ति
3. शांतिदायी विचार
4. योग दर्शन शास्त्र 1
5. वेदांत सिद्धांत
6. सत्य सुन्दर और स्वतंत्र विचार
7. सत्य सरल और सर्वांगपूर्ण योग का परिचय
8. सूक्ष्म शरीर सूक्ष्म लोक स्वर्ग एवं मुक्ति का रहस्य
9. शिवबचनामृत

### Books List and Pricing

Sn.	Books Title	Price
1	निरोग होने का अद्भुत उपाय	Rs. 35
2	आत्मबल मनोबल और इच्छशक्ति	Rs. 30
3	शांतिदायी विचार	Rs. 30
4	योग दर्शन शास्त्र 1	Rs. 75
5	योग दर्शन शास्त्र २	Rs. 60
6	वेदांत सिद्धांत	Rs. 60
7	सत्य सुन्दर और स्वतंत्र विचार	Rs. 60
8	सत्य सरल और सर्वांगपूर्ण योग का परिचय	Rs. 30

9	ताज़ा और सत्य सनातन धर्म	Rs. 3
10	सूक्ष्म शरीर सूक्ष्म लोक स्वर्ग एवं मुक्ति का रहस्य	Rs. 50
11	छान्दोग्य उपनिषद् में आत्मज्ञान	Rs. 5
12	योग और उसकी गुप्त सिद्धियां प्राप्त करने का उपाय	Rs. 25
13	योग विज्ञान	Rs. 20
14	सचित्र योग साधन	Rs. 70
15	सञ्ची संध्या	Rs. 15
16	शरीर से अमर होने का उपाय	Rs. 40
17	वृद्धावस्था और कुरूपता दूर करने का उपाय	Rs. 15
18	अत्यन्त सत्य या आत्मज्ञान की कथायें	Rs. 15
19	मनुष्य की महिमा; ईश्वर की नहीं	Rs. 15
20	ईश्वर है या नहीं ?	Rs. 40
21	सञ्ची शान्ति, सञ्ची मुक्ति और सञ्चा स्वराज प्राप्त करने का उपाय	Rs. 35
22	मुक्त और स्वतन्त्र होने का उपाय	Rs. 20
23	सृष्टि विज्ञान शास्त्र	Rs. 20
24	भूतविद्या वा मेस्मेरिजम	Rs. 20
25	सूक्ष्म अधर्व वेद	Rs. 30
26	यजुर्वेद सूक्ष्म	Rs. 30
27	गायत्री मन्त्र का सञ्चा अर्थ	Rs. 20
28	ईशावास्योपनिषद् का निष्पक्ष भाष्य	Rs. 50
29	मुनिसमाज और आर्यसमाज	Rs. 20
30	परमार्थ प्रकाश	Rs. 40
31	मुनिसमाज की स्थापना का उद्देश्य	Rs. 20
32	शंका समाधान	Rs. 30
33	गीता पर अत्यन्त निष्पक्ष और स्वतन्त्र विचार	Rs. 35
34	गीता का मर्म	Rs. 15
35	भागवत का मर्म	Rs. 40

36	रामायण का मर्म	Rs. 15
37	तुलसीकृत रामायण की आलोचना	Rs. 100
38	सीता रामायण	Rs. 20
39	शिवमुनि कहानी संग्रह	Rs. 50
40	शिव मुनि महाराज का मुनीश्वर पद से प्रथम भाषण	Rs. 15
41	प्रणव की महिमा	Rs. 15
42	स्वतंत्र विचार की विवाह पद्धति	Rs. 4
43	वीर्य रक्षा	Rs. 3
44	परदे का पाप	Rs. 15
45	सनातन धर्म में शुद्धि	Rs. 15
46	भजन ज्ञान गीता	Rs. 15
47	शिवमुनि ग्रन्थावली (प्रथम खण्ड)	Rs. 300

पुस्तकें मंगाने का पता-  
 अखिल भूमण्डलीय सर्वशिरोमणि मुनिसमाज  
 24/1 अलहदादपुर, गोरखपुर-273001

Or [Order Books online](https://www.shivmunisamaj.com/order-books-contact-us)

(<https://www.shivmunisamaj.com/order-books-contact-us>)

Or mail us at : [shivmunisamaj@gmail.com](mailto:shivmunisamaj@gmail.com)

Call or Whatsapp: 9800946083 / 8431270007



## योगेश्वर शिवमुनि महाराज का जीवन-परिचय

- जन्म** : शरदपूर्णिमा आश्विन मास संवत 1941 विक्रमी, शकाब्द 1806 तदनुसार 4 अक्टूबर 1884 ईसवी, शनिवार, मुनिसंवत से 52 वर्ष पूर्व।
- स्थान** : मोहल्ला जगन्नाथपुर, गोरखपुर नगर (उत्तर प्रदेश), भारत।
- माता** : श्रीमती शिवरानी देवी।
- पिता** : पं० श्रीकान्त ओझा।
- शिक्षा** : षडदर्शन शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य।
- रचनायें** : प्रथम पुस्तक "वेदान्त सिद्धान्त", अंतिम कृति "ईशावास्योपनिषद् का निष्पक्ष भाष्य"।
- पत्रिका** : सन 1913-14 में "ज्ञानशक्ति" नामक पत्रिका का शुभारम्भ किया और स्वयं आजीवन उसके सम्पादक रहे। अब यह मुनिसमाज की मुखपत्रिका है।
- संस्था** : 52 वर्ष की आयु में 26 दिसम्बर 1935 ईसवी को गोरखपुर नगर में अलहदादपुर चौराहे पर स्थित अपने निजी भवन में "अखिल भूमण्डलीय सर्वशिरोमणि मुनिसमाज" की स्थापना किया और स्वयं संस्थापक - अध्यक्ष (आदि मुनीश्वर) के रूप में सम्पूर्ण जीवन उसके प्रचार-प्रसार में अर्पित कर दिया। मुनिसमाज के स्थापना वर्ष से ही मुनि संवत प्रारम्भ किया।
- सामाजिक** : विवाहित गृहस्थ।
- महाप्रयाण** : 12 फरवरी 1962 ईसवी, सोमवार, मुनि संवत 27 (लखनऊ)।
- विशेष** : मुनिसमाज की स्थापना से पहले "पं० शिव कुमार शास्त्री" नाम से प्रसिद्ध थे और बाद में "शिवमुनि" नाम विख्यात हुआ।